International Journal of Sanskrit Research 2017; 3(2): 155-157

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2017; 3(2): 155-157
© 2017 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 25-01-2017
Accepted: 28-02-2017

**डॉ सुनीता शर्मा**
सहायक आचार्य, राजकीय मीरा कन्या महाविद्यालय उदयपुर, राजस्थान, भारत

**Corresponding Author:**
**डॉ सुनीता शर्मा**
सहायक आचार्य, राजकीय मीरा कन्या महाविद्यालय उदयपुर, राजस्थान, भारत

# मेवाड़ संस्कृत साहित्य में जन कल्याण कार्य

**डॉ सुनीता शर्मा**

## प्रस्तावना

मेवाड़ संस्कृति एवं साहित्य सर्जन की महान एवं सतत परंपरा का जीवंत क्षेत्र हैं। मेवाड़ के इस पवित्र भूमि पर शौर्य, बलिदान, त्याग और देशानुराग पर मर मिटने वाले वीर योद्धाओं के समान ही कलम के धनी साहित्यकारों की भी कमी नहीं हैं। संस्कृति के मूल मंत्र "शस्त्रेण रक्षिते राष्ट्रे शास्त्र-चिन्ता प्रवर्तते" अर्थात शस्त्र से सुरक्षित राष्ट्र में ही शास्त्रों की रचना हो सकती हैं, का पालन पूर्णरूपेण मेवाड़ राज्य ने किया। मेवाड़ में संस्कृत, राजस्थानी, हिंदी आदि अनेक भाषाओं में विविध साहित्यिक विधाओं की रचनाएं इसलिए हो सकी क्योंकि मेवाड़ वीर राजपूत राजाओं से रक्षित था।

संस्कृत-साहित्य सर्जन की दृष्टि से महाराणा राज सिंह का काल (1652 से 1680) तदनुसार विक्रम संवत 1709 - 1737 का काल अविस्मरणीय है। महाराणा स्वयं शिक्षित एवं विद्वान थे। उनकी शिक्षा-दीक्षा काशी के प्रकांड विद्वानों के संरक्षण में संपन्न हुई थी। [1]

महाराणा राज सिंह की रूचि इतिहास संशोधन और लेखन में भी थी। रणछोड़ भट्ट और सदाशिव नागर का साहित्य उन्हीं की प्रेरणा का परिणाम है। महाराणा राजसिंह ने पृथ्वीराज रासो के संपादन कार्य हेतु अपने पुत्र सरदार सिंह के अधीन काम करवाया। जिसका संपादन का काम करुणोदधि के शिष्य खेतमी ने किया। [2]

यद्यपि महाराणा राजसिंह का काल पूर्ण शांति का काल नहीं था। राज्य की आंतरिक सुदृढ़ता एवं प्राचीन गौरव प्रतिष्ठा की पूर्ण स्थापना के लिए राणा निरंतर क्रियाशील रहे तथापि साहित्यिक दृष्टि से महाराणा राजसिंह का काल स्वर्ण अक्षरों में अंकित करने योग्य हैं।

महाराणा के काल में रणछोड़ भट्ट द्वारा "राज प्रशस्ति महाकाव्य" की रचना की गई थी। कवि रणछोड़ भट्ट द्वारा विचरित "अमरकाव्य" नाम से एक अन्य ग्रंथ भी उपलब्ध होता है। महाराणा राजसिंह के काल में ही सदाशिव नागर ने "राजरत्नाकर महाकाव्य" की रचना की थी। साहित्यिक गतिविधियों के साथ ही मेवाड़ के राणाओ ने अनेक जनकल्याण कार्य भी करवायें।

## मेवाड़: जन कल्याण कार्य

मेवाड़ में सार्वजनिक उपयोग हेतु तालाब, कुएँ बावड़ी खुदवाने की परम्परा प्राचीन काल से रही है। इस परम्परा का निर्वाह क्षत्रिय महाराणाओं ने ही नहीं समाज के अन्य वर्गों के सम्पन्न, उदार व्यक्तियों, स्त्रियों ने भी समय-समय पर वाटिकाओं, तालाबों का निर्माण करवाकर इस दिशा में अपनी प्रशंसनीय भूमिका निभाई है।

विशाल जलाशय यथा - राजसमंद, जयसमंद आदि के निर्माण में मेवाड़ के महाराणाओं का विशेष योगदान रहा। महाराणा राजसिंह द्वारा बनवाये गये राजसमंद तालाब पर एक करोड पाँच लाख सेतालीस हजार पांच सौ चौरासी रुपये खर्च हुए। [3] महाराणा राजसिंह-कालीन संस्कृत-साहित्य द्वारा ज्ञात होता है कि महाराणाओं द्वारा बाँध एवं जलाशयों का निर्माण करवाया जाता था। इस जन-कल्याण कार्य में स्त्रियाँ भी रुचि रखती थीं।

अमरकाव्य में उल्लेख प्राप्त होता है कि भोगादित्य ने एकलिंग शिव के समीप बहुत धन व्यय करके "भालि" नामक जलाशय बनवाया-

नोगादित्येन भूपेन एकलिंगशिवान्तिक।
कल्पितो नाल्यवसुभालिराख्यो जलाशयः ।। (अमरकाव्य सर्ग 2 / 24)

आशादित्य ने गंगोदभव कुण्ड का निर्माण करवाया तथा नगरी का नाम "आड" रखा। [4] कालभोजादित्य ने अत्यधिक धन व्यय करके "इन्द्र सरोवर" बांध का निर्माण करवाया। यह उत्तम बाँध वाला सरोवर "भोजसर" नाम से आज भी प्रसिद्ध है। बाप्पा ने "घासा" नामक ग्राम के समीप बाप्पासर नामक तालाब का निर्माण करवाया। हम्मीर के विषय में उल्लेख प्राप्त होता है कि वि.सं.

1357 में केलवाडपुर में रहते हुए उन्होंने राज्य प्राप्त किया तथा "हम्मीरसर" सरोवर का निर्माण करवाया। उनके द्वारा बाईस जलाशयों का निर्माण भी करवाया गया। [5]

अमरकाव्य में उल्लेख प्राप्त होता है कि मोकल ने अपने पुत्रहीन भाई रावत बाघ की पुण्य प्राप्ति हेतु "बाघेला" नामक तालाब बनवाया। [6] महाराणा कुंभा ने रामकुण्ड का निर्माण करवाया और श्रीबसंतपुर में सात तालाबों का निर्माण करवाया। राणा रायमल ने "शंकर सर" एवं रामसर का निर्माण करवाया। [7]

महाराणा उदयसिंह ने वि.सं. 1622 गणगौर तीज के दिन तालाब की प्रतिष्ठा करायी व तालाब का नाम उदयसागर रखा। महाराणा राजसिंह ने वि.सं. 1725 में बड़ी गाँव में तालाब की प्रतिष्ठा करवायी और तडाग का नाम "जनासागर" रखा। [8] महाराणा ने राजसमुद्र नामक झील का और उसके बाँध का निर्माण करवाया। महाराणा राजसिंह के ज्येष्ठ पुत्र जयसिंह ने रंगसर तडाग की प्रतिष्ठा करवायी। वि.सं. 1732 में राजसिंह की पत्नी रामरसदे ने देबारी के घाटे में बनी वाटिका की प्रतिष्ठा करवायी। राजसिंह की रानी जोधपुरी ने राजनगर में वाटिका की प्रतिष्ठा करवायी। [9]

अतः स्पष्ट है तालाब, कुएँ, बावड़ीयां खुदवाने के पीछे लोकोपकार व पुण्य की भावना ही प्रमुख रहती थी। कूप, वापी एवं सरोवर आदि के निर्माण को महान पुण्य कार्य समझा जाता था। यह कार्य एक मान्य धार्मिक आदर्श एवं प्रचलित सांस्कृतिक परम्परा थी।

प्राचीनकाल से भारत के शासकों का स्थापत्य कार्य के प्रति रुझान रहा है। मानव संस्कृति के इतिहास में स्थापत्य का अपना महत्वपूर्ण एवं स्वतंत्र स्थान रहा है, जिसके द्वारा हम किसी देश एवं जाति की सच्ची सांस्कृतिक झाँकी उपस्थित कर सकते हैं। महाराणा राजसिंह (वि.सं. 1709-1737) का काल स्थापत्य कला के विकास क्रम की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। इस काल में मेवाड में हुए स्थापत्य निर्माण के कलागत विकास का महत्वपूर्ण स्थान है। महाराणा राजसिंह के काल में निर्मित देवालय, राजप्रसाद, वाटिकाएँ, बाँध, तालाब आज भी मेवाड़ की सांस्कृतिक अभ्युन्नति को प्रकट करती हैं।

मेवाड के महाराणाओं द्वारा मन्दिर निर्माण, मूर्ति प्रतिष्ठा एवं मन्दिर के जीर्णोद्धार तथा दुर्ग निर्माण से सम्बन्धित अनेक उदाहरण प्राप्त होते हैं, जिसके द्वारा तत्कालीन स्थापत्य कार्यों पर अच्छा प्रकाश पड़ता है।

कवि रणछोड भट्ट के विवरण द्वारा ज्ञात होता है कि काल भोजादित्य ने नागद्रहापुर (नागदा) में पार्वतीयुक्त शिव का मंदिर बनवाया। [10] बाप्पा ने अमृतकुंड के पास इष्टदेव शिव का मंदिर बनवाया। बाप्पा की माता एवं पत्नी ने नागदा में शिव के दो मंदिर बनवाये जो आज सास बहु के मंदिर के नाम से प्रसिद्ध है-

नागहदेऽकारि ततः प्रसिद्ध श्वश्रुवधूमंदिरसंज्ञया तत्।" (अमरकाव्य 3/72)

रावल खुम्मान ने शिव, विष्णु, सूर्य, गणेश एवं शक्ति के पांच मंदिर नागदा में पूर्व की ओर द्वार वाले बनवाये। रावल गोविन्द ने स्वर्ण से सुशोभित शिव-पार्वती का मंदिर नागदा में बनवाया। रावल आलू द्वारा भी नागदा में शैव मंदिर बनवाने का उल्लेख प्राप्त होता है। [11]

राहपे-माहप ने केलुवा गाँव में विष्णु के मन्दिर बनवाये। महाराणा हम्मीर ने स्फटिक की बनी एकलिंग की मूर्ति जो संकट के समय में इन्द्र सरोवर में रख दी गई थी, उसके न मिलने पर शुभ समय में श्यामपोषाण निर्मित चतुर्मुखी शिव प्रतिमा की प्रतिष्ठा की गई। अमरकाव्य अनुसार इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा सीहोल ग्राम में की गई। [12]

महाराणा लाखा द्वारा भी कई देव मन्दिरों के बनवाये जाने का उल्लेख प्राप्त होता है। महाराणा मोकल ने चित्रकूट में समाधीश्वर मंदिर के मणितोरण एवं प्रकोष्ठ का जीर्णोद्धार करवाया। चित्रकूट में स्थित दुर्गा के मंदिर में सर्वधातुमय सिंह का निर्माण भी करवाया। [13]

महाराणा कुंभा के विषय में उल्लेख प्राप्त होता है कि कुम्भा ने वि.सं. 1507 में कुंभ स्वामी का मंदिर बनवाया और गदाधर, आदिवाराह तथा चक्रपाणि (विष्णु) के मंदिर का भी निर्माण करवाया। राजरत्नाकर में उल्लेख प्राप्त होता है कि कुंभा ने आदिवाराह का मंदिर पुष्कर में बनवाया तथा गदाधर (विष्णु की मोक्षदायिनी प्रतिमा) का निर्माण करवाया। कुंभा द्वारा वि.सं. 1521 में द्वारका में द्वारिकेश का मंदिर बनवाने का उल्लेख भी प्राप्त होता है। [14]

महाराणा कुंभा ने एकलिंग के ऊपर अविच्छिन्न जलधारा के लिए गंगा जल के समान जल वाले "कुरञ्जी कुण्ड" का निर्माण करवाया। कुंभा द्वारा गया में गदाधर विष्णु की प्रतिमा बनवायी गई व शिव के अनेक मंदिरों का निर्माण भी करवाया गया। महाराणा कुंभा ने नागौर से गणेश एवं माण्डव से हनुमान की मूर्ति लाकर यहाँ स्थापित की। राजरत्नाकर में उल्लेख प्राप्त होता है कि कुभा ने गांडन्यपुर (मंडोर) से हनुमान मूर्ति लाकर कुम्भलगढ़ में स्थापित की। [15]

**महाराणा जगत्सिंह ने पीछोला के तट पर भेल मंदिर नामक प्रासाद एवं मोहन मंदिर बनवाया-**

प्रासादं सुन्दरं चक्रे भेरूमंदिरनामकम्।
पीछोलाख्यतटाकस्य तटे मोहनमंदिरम्।। (अमरकाव्य 20/19)

राजप्रशस्ति में भी यह उल्लेख प्राप्त होता है। महाराणा जगत्सिंह ने जगन्नाथ राय "केशव" एवं लक्ष्मी सहित दानीराय की स्थापना की। महाराणा जगत सिंह द्वारा एकलिंग के मंदिर पर स्वर्ण कलश, ध्वजा आदि चढ़ाने का उल्लेख भी प्राप्त होता है। महाराणा राजसिंह ने वि.सं. 1732 में एकलिंग जी मंदिर पर स्वर्ण छत्र तथा स्वर्ण दण्ड युक्त ध्वजा लगवायी। [16] राजसमुद्र की पाल पर गवाक्ष स्थानों में गणेश, विष्णु के अवतारों की मूर्तियां भी स्थापित करवायी।

मेवाड़ के महाराणाओं द्वारा मंदिर के अतिरिक्त विविध निर्माण कार्य अपनी सुख-सुविधा की दृष्टि से तो किये जाते ही थे. वहीं प्रजाहित की दृष्टि से भी अनेक निर्माण कार्य समय-समय पर करवाये जाते थे।

महाराणा मोकल ने एकलिंग के पास स्फटिक भस्म युक्त कैलाश पर्वत के समान प्रतीत होने वाला, तीन दरवाजों से युक्त परकोटे का निर्माण करवाया जो शिल्प कला का श्रेष्ठ उदाहरण है। महाराणा कुंभा ने यश प्रसार हेतु देव प्रतिमाओं से सुशोभित, गगन चुम्बी, कीर्तिस्तम्भ का निर्माण करवाया। कुम्भलमेरू दुर्ग का निर्माण भी करवाया। [17]

महाराणा राजसिंह द्वारा भी राजसमुद्र का निर्माण करवाया गया। राजसमुद्र के सेतुओं का नाम, प्रकोष्ठ, मण्डप आदि शिल्प कला की दृष्टि से अपूर्व है।

महाराणा राजसिंह ने सर्व विलास नामक उद्यान का निर्माण करवाया। महाराणा राजसिंह के पश्चात् महाराणा जयसिह ने जयसमुद्र नामक एक विशाल झील का निर्माण करवाया तथा कृष्ण विहार नामक जलयन्त्र युक्त राजभवन व जयसमुद्र बौध के समीप स्थित पहाड़ पर राजमहल बनवाया।

अतः स्पष्ट है कि मेवाड के महाराणाओं द्वारा मंदिर, दुर्ग, झीलों वाटिकाओं का निर्माण करवाया जाता था। राजसिंह कालीन साहित्य में राजसमुद्र के निर्माण का विस्तृत विवरण प्राप्त होता है। किन्तु स्थापत्य की दृष्टि से अनुपम उदाहरण होते हुए भी कवियों का ध्यान इस ओर नहीं गया। अतः राजसिंह के काल में निर्मित मन्दिरों, भवनों का शिल्प की दृष्टि से विशेष उल्लेख इन कृतियों में प्राप्त नहीं होता।

**संदर्भ ग्रंथ सूची**


1. राज प्रकाश, श्लोक, 126
2. शोध पत्रिका, वर्ष 41, अंक 2, पृष्ठ 48
3. वीर विनोद, खण्ड 1, पृष्ठ 451
4. अमरकाव्य, सर्ग 2. श्लोक 30, यह कुण्ड आज भी उदयपुर में आयड में स्थित है।
5. अमरकाव्य, सर्ग 7, श्लोक 47, 48, 77
6. अमरकाव्य, सर्ग 10. श्लोक 33, 49
7. वही, सर्ग 11, श्लोक 30
8. राजप्रशस्ति, सर्ग 8, श्लोक 47
9. राजप्रशस्ति सर्ग 14, श्लोक 11-12
10. अमरकाव्य, सर्ग 2, श्लोक 35
11. वही, सर्ग 4, श्लोक 23
12. अमरकाव्य, सर्ग 7, शलोक 73
13. वही, सर्ग 9, श्लोक 13

14. अमरकाव्य, सर्ग 10, श्लोक 43
15. राजरत्नाकर सर्ग 5, श्लोक 1
16. राजरत्नाकर, सर्ग 20, श्लोक 4
17. राजप्रशस्ति, सर्ग 4. श्लोक 14